पॉल विडाल डी ला ब्लाश का भूगोल में योगदान

(Contribution of Paul Vidal De La Blache to Geography)

परिचय –

जीवन काल (1845–1918): 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में 73 वर्ष की जिन्दगी जीने वाले फ्रांस के सर्वप्रमुख भूगोलवेता विडाल डी ला ब्लाश लगभग 40 वर्षों तक फ्रांसीसी भौगोलिक पटल पर छाए रहे एवं साथ ही फ्रॉसीसी भूगोलवेताओं का मार्गदर्शन भी किया।

- ब्लाश ने मानव भूगोल एवं प्रादेशिक भूगोल को प्रगति को उच्चतम शिखर तक पहुँचाया।
- ब्लाश मानव भूगोल के संस्थापक थे।
- ब्लाश सम्भववाद के जन्मदाता थे।
- इतिहास एवं भूगोल के विद्वान ब्लाश इटली, युनान तथा अन्य युरोपीय देशों में भ्रमण करके भूगोल को पल्लवित एवं पुष्पित किया।

ब्लाश का जीवन–परिचय एवं शिक्षा–

ब्लाश का जन्म पेरिस में सन् 1845 ई0 में हुआ। स्नातक स्तर तक की शिक्षा पेरिस के **Ecole Normale** के विख्यात संस्थान से इतिहास, भूगोल एवं दर्शनशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। बाद में एथेंस स्थित फेंच विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हुए।वहाँ वे युनान की प्राचीन सभ्यता से काफी प्रभावित हुए। 1872 तक शोध कार्य हेतु पेरिस लौट आए। पी–एच0 डी0 के लिए शोध कार्य में प्लेटो से टॉलेमी तक की अवधि में उपलब्धियों का अध्ययन करने के लिए ब्लॉश पुनः युनान गए। लेकिन फिर लौटकर **Ecole Normale** से ही डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद नैन्सी विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता पद पर नियुक्त हुए। इस पद पर 5 वर्षो तक कार्य करने के बाद वे जर्मनी गए। वहाँ

भूगोल को ब्लाश की देन (Contribution of Blache to Geography)–

(1) ब्लाश की रचनात्मक देन (His Writings and Conrributions)—

ब्लाश ने Annsl De Geography नामक भौगोलिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिसमें उनके अधिकांश लेख प्रकाशित हुए। उनके प्रसिद्ध पुस्तकें थी–

- युरोप के राज्य एवं राष्ट्र, 1889 (Estate et Nation del Europe)
- युरोप की मानचित्रावली, 1894 (Atlas of Europe)
- फॉस का भूगोल, 1903 (Tableau de la Geographie de la France)
- पुर्वी फॉस का भूगोल, 1917 (La France de la Est)
- मानव भूगोल के सिद्यान्त, 1921 (Principles de Geographie Humaine)

मानव भूगोल के सिद्यान्त ब्लाश की सर्वप्रमुख एवं ख्यातिप्राप्त पुस्तक थी जिसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के पश्चात 1921 ई0 में उनके शिष्य डी मार्तोनी के सहयोग से हुआ। इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद 1926 ई0 में हुआ जिसमें मानव भूगोल के आधारभूत सिद्यान्तों एवं तथ्यों का वर्णन है।

(2) भूगोल के विशिष्ट लक्षण (Specific traits of Geography)—

- भूगोल में पार्थिव घटनाओं की एकता महत्वपुर्ण है।
- सभी पार्थिव घटनाएँ विविधतापुर्ण होते हुए भी एक समायोजन में स्थित है।
- घटनाओं का विविधता एवं समायोजन का वर्णन एवं व्याख्या भूगोल में होती है।
- भूगोल में ऐसी ऐसी वैज्ञानिक विधियों को निरन्तर खोज जिसके द्वारा पार्थिव घटनाओं की व्याख्या एवं वर्गीकरण किया जा सके।
- भूगोल में परिवेश (Environment) के विभिन्न तत्वों का मानव पर प्रभाव का अध्ययन भूगोल में किया जाता है।
- भूगोल में मानव द्वारा भूतल पर लाए गए परिवर्तन एवं उसके महत्वपुर्ण कार्यों का मूल्यांकन।

(3) पेज–संकल्पना (Concept of Pays/ Pays Concept)—— ब्लाश ने पेज की सकल्पना का प्रतिपादन किया।

(4) संम्भववाद की संकल्पना – Nature is never more than an advisor. ब्लाश संभववाद के प्रतिपादक एवं प्रणेता थें। जर्मन नियतिवाद की विचाराधारा के कटु आलोचक थे। ब्लाश ने मानव की स्वतंत्रता एवं उसके कार्यकुशलता पर काफी बल दिया। मानव पर पर्यावरण का नियंत्रण से जुड़ा जर्मन विचारधारा का कटु आलोचनाएँ की।

(5) प्रदेशों की संकल्पना (Concept of Region)—— ब्लाश पार्थिव एकता

(6) प्रादेशिक अध्ययन की संकल्पना (Concept of Regional study)——

(7) भौतिक परिवेश (Physical Environment)——

(8) पार्थिव एकता व अर्न्तसम्बन्ध का सिद्यान्त (The Principle of Terrestrial Unity or Interconnection) – ब्लाश पार्थिव एकता एवं अर्न्तसम्बन्धों के सिद्यान्त को मानव भूगोल का एक प्रमुख सिद्यान्त मानतें थे। ब्लाश के अनुसार——

- सभी भौगोलिक प्रगति में प्रमुख विचार पार्थिव एकता ही विचार है।
- मानव भूगोल के तत्व पार्थिव एकता के साथ सम्बद्ध है और केवल पार्थिव एकता के सिद्यान्त पर ही उनकी व्याख्या की जा सकती है।
- पार्थिव एकता एक सार्वभौमिक सत्य है जो प्रत्येक देश–काल में विद्यमान होती है।
- जिस प्रकार ब्रह्माण्ड के विभिन्न आकाशीय पिण्ड व नक्षत्र एक दूसरे के गुरूत्वाकर्षण बल के कारण संतुलित रहते हैं, ठीक उसी प्रकार भूतल पर विभिन्न प्रकार के भौगोलिक तथ्य एक दूसरे से प्रभावित एवं सम्बन्धित है। ब्रुंश, डिमांजिया आदि फॉसीसी भूगोलवेता भी इस सिद्यान्त को स्वीकार करते हैं।

(9) विशिष्ट जीवन पद्धति की संकल्पना –

(4) विशिष्ट जीवन पद्धति की संकल्पना –

मानव भूगोल का लक्ष्य –

फॉसीसी भूगोल पर ब्लाश का प्रभाव –